वर्तमान परिदृश्य में डॉ0 राममनोहर लोहिया के विचारों की सार्थकता

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

आज पूरा विश्व रासायनिक और आणविक हथियारों के आसन्न संकट से भयाक्रान्त है। डा0 लोहिया अहिंसा, सत्याग्रह और सिविल नाफरमानी का ऐसा आन्दोलन विश्व स्तर पर चलाना चाहते थे जिससे समूची मानवता भयमुक्त हो सके। इन सिद्धान्तों को वे एक फौलादी दीवार की शक्ल देना चाहते थे, जिससे भयग्रस्त संसार को सुरक्षा की गारंटी मिल सके। अपने अकेले बल–बूते पर उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में रंग–भेद के विरुद्ध अपनी गिरफ्तारी देकर, इसकी पहल की थी। हिंसक क्रान्ति के विरुद्ध वह सविनय अवज्ञा को ज्यादा उपयुक्त मानते थे। उनका कहना था कि ''यह एक ऐसा हथियार है, जिससे अकेला एक मनुष्य बिना किसी गिरोह या समूह के भी अन्याय के विरुद्ध खड़ा होकर अन्यायी को ललकार सकता है।'' तथा अहिंसा एटम बम का विनाशक और अवरोधक है। उनका कहना था कि अन्याय के प्रतिरोध में सुकरात और थोरो ने भी अपने प्राणों की आहुति दी थी। ''अब तक मनुष्य इस अन्याय को इसलिए सहता रहा है कि उसके पास कोई ऐसा तरीका नहीं था कि जिसके माध्यम से इसका प्रतिकार कर सकता। किसी दूसरे तरीके में, चाहे वह हथियार का क्यों न रहा हो, सबकी भागीदारी संभव नहीं थी ' ' संसार में पहली बार महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन का सूत्रपात करके यह सिद्ध कर दिया था कि सारी पुलिस, सेना और दमन के विरुद्ध कैसे कुछ लोग आत्मशक्ति और मनोबल के आधार पर खड़े हो सकते हैं।'' डा0 लोहिया ने इस व्यवहारिक सत्य को स्वीकार किया। इस सिद्धान्त की व्यवहारिकता आज स्वतः सिद्ध हो रही है। जो देश आणविक हथियारों के मामले में सबसे ज्यादा सम्पन्न थे, वे खुद शस्त्रों को विनष्ट करने की दिशा में सक्रिय पहल कर रहे हैं।

देशकाल की सीमा से परे लोहिया विश्व दृष्टि को बनाने का सपना देखते थे, 'विश्व नागरिता' की अवधारणा देने वाले डॉ0 लोहिया प्रथम चिन्तक थे, उनकी इच्छा थी देशों में बंटी सीमायें न हों, बल्कि हर व्यक्ति को हर जगह जाने की आजादी हो। आज जब सीमाओं की सुरक्षा, सबसे बड़ा सवाल बन गया है, पूरा विश्व इन सीमाओं की सुरक्षा के लिये अरबों रूपये खर्च करता है। साम्रराजी शक्तियां निंरतर आक्रमण की टोह में रहती हैं। युद्ध और आक्रमण से मानव समुदाय निरंतर आक्रांत रहते हों, ऐसे अमानवीय समय में डॉ0 लोहिया की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। संभवतः डॉ0 लोहिया का यह सपना लोगों को कोरा आदर्शवाद लगे, आधारहीन दर्शन लगे, अव्यवहारिक लगे परन्तु यह सत्य है, कि दुनियां विध्वंस और अराजकताओं के जिस मुहाने पर बैठी है वहां डॉ0 लोहिया के ये विचार ही सुकूनमय भविष्य निर्मित कर सकते हैं। कल्पना कीजिये उस दुनिया की जहां युद्ध न हों, जहां आतंक न हो, जहां वर्चस्व न हो, जहां बम और बंदूकें न हो! आश्चर्य की बात यह है कि डॉ0 लोहिया यह सपना तब बुन रहे थे, जब अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष का वे हिस्सा रह चुके थे।

लाहौर में भगत सिंह को फांसी दिए जाने के विरोध में लीग ऑफ नेशन्स की

बैठक में बर्लिन में पहुंचकर सीटी बजाकर दर्शक दीर्घा से विरोध प्रकट किया। सभागृह से उन्हें निकाल दिया गया। भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे बीकानेर के महाराजा द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने पर डॉ0 लोहिया ने रूमानिया की प्रतिनिधि को खुली चिट्ठी लिखकर उसे अखबारों में छपवाकर उसकी कॉपी बैठक में बंटवाई। लोहिया ने महायुद्ध के समय युद्ध भर्ती का विरोध, देशी रियासतों में आंदोलन, ब्रिटिश माल जहाजों से माल उतारने व लादने वाले मजदूरों का संगठन तथा युद्धकर्ज को मंजूर तथा अदा न करने, जैसे चार सूत्रीय मुद्दों को लेकर युद्ध विरोधी प्रचार शुरू कर दिया। गांधी जी ने मूल रूप में लोहिया द्वारा दिए गए चार सूत्रों को स्वीकार किया।

डॉ0 लोहिया ने स्पष्टतः इस बात का प्रतिपादन किया कि भारतीय व एशियाई समाजवाद, यूरोपीय मार्क्सवाद की समाजवादी प्रक्रिया से भिन्न होना चाहिए क्योंकि दोनों महाद्वीपों की ऐतिहासिक भौतिक और सामाजिक दशायें भिन्न हैं। वैचारिक धरातल पर समाजवाद को पूँजीवाद व साम्यवाद दोनों से समान दूरी रखनी आवश्यक है। पूँजीवाद व साम्यवाद दोनों ही मानवता को स्वतंत्रता, समानता और समृद्धि की व्यापक सुरक्षा देने में असमर्थ है। शीतयुद्ध के दौर में लोहिया एशिया अफ्रीका व लैटिन अमरीका के देशों को सामान्य रूप से और भारत को विशेष रूप से अटलांटिक (नाटो) और वारसा गुटों से समान दूरी बनाये रखने के प्रबल समर्थक थे। वे गुटनिरपेक्षता के स्थान पर एक सक्रिय तीसरी शक्ति के निर्माण के विचार के पोषक थे। रूस, मध्य एशिया व पूर्वी यूरोप में साम्यवाद के पतन, उसके बाद आने वाले वैश्विक आर्थिक संकट ने पूँजीवादी व्यवस्था को धक्का पहुँचाया। जिसके फलस्वरूप साम्यवादी चीन के द्वारा भी निजीकरण व बाजारवादी व्यवस्था को अपना लिया गया। यह सब पूँजीवादी व साम्यवादी व्यवस्था के अर्न्तविरोधों की वजह से हुआ। इन परिस्थितियों में लोहिया का 'सम–अनुपयोग' और 'सम–दूरी' का सिद्धान्त स्वयं अपनी प्रासंगिकता व वर्तमान विश्व में अपनी उपायदेयता सिद्ध करता है।

एशियाई समाजवादी सम्मेलन के लिये डॉ0 लोहिया ने निरंतर प्रयास किये लेकिन जनवरी सन् 1953 ई0 में हुए सम्मेलन में डॉ0 लोहिया ने भाग नहीं लिया, कारण पार्टी की कथनी और करनी में अंतर होना था। इस समय तक डॉ0 लोहिया का भारतीय संसदीय लोकतंत्र पर से विश्वास लगभग उठ चुका था। पूंजीवादी सोच के तहत औद्योगीकरण और विकास की संभावनायें तलाशते नेहरू से उनका मोहभंग हो चुका था। किन्तु सन् 1954 ई0 के सम्मेलन में वे पुनः पूरी उम्मीद के साथ सम्मिलत हुए, वहां भी डॉ0 लोहिया को बहुत जल्दी यह अनुभव हो गया कि यह एशियाई समाजवादी सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति बनने की बजाय प्रतिष्ठित राजनीति का अड्डा बन गया है। इस सम्मेलन में डॉ0 लोहिया ने यह प्रस्ताव रखा कि केनिया और ट्यूनिशिया पर बर्बर दमन करने वाली साम्राज्यवादी ताकतों के विरोध स्वरूप इन देशों की वस्तुओं का बहिष्कार किया जाये किन्तु यह प्रस्ताव पास नहीं हो सका। 'इंटरनेशल सोशलिस्ट' से मोहभंग के बाद लोहिया ने उग्र पथ का चयन किया था, और परिवर्तन के लिये उग्रतावादी रूख आवश्यक है, बहुत स्पष्ट रूप से उन्हें यह बात समझ आती थी। कि क्रांति का झंडा उठाये लोग कितना दोगला जीवन जीते हैं। इस उग्रता की भी अपनी सीमायें हैं, जो उसमे अन्तर्भुक्त हैं, जहां विचार, तर्क बौद्धिकता, राजनीतिक हिंसा में अपचयित हो जाती हैं, तथा अपने गंभीर अर्थ खो देती है।

डॉ लोहिया ने नेपाल के प्रति भारतीय रूख पर हमेशा एतराज जताया । बफर स्टेट के रूप में भारत चीन के बीच इस हिमालयी राष्ट्र में राज साही के खिलाफ लोकशाही की लड़ाई चल रही थी। डॉ0 लोहिया ने उसे आगे बढाने पर उस बल दिया और उसमें भूमिका

निभायी। लेकिन भारत सरकार ने गलत नीतियां चला कर वहॉ भारत विरोधी प्रवृतियों को बढ़ाया। आज वह माओवादी व भूटान भारत के प्रभावों में है और सिक्कम भारत का पूर्ण राज्य है। पर इन दोनों जगहों पर जो विवाद व लड़ाईयां हैं, उसे उस समय डॉ0 लोहिया के सुझाओं को मानकर रोका जा सकता था। डॉ0 लोहिया चीन से भारत को हमेशा सचेत रहने की बात करते रहे। उनका मामना था की तानशाही और विस्तार की रणनीति दोने के मूल चरित्र अभिन्न हिस्सा है। इस लिए भारत को सावधान करना चाहिए लेकिन नेहरू ने डॉ लोहिया की बातो पर ध्यान नहीं दिया चीन ने आक्रमण कर दिया तब जाकर लोगों का ध्यान डॉ0 लोहिया की चेतावनी की तरफ गया तिब्बत डॉ0 लोहिया के विदेशी नीति संबन्धी में महत्वपूर्ण स्थान रखता है । जब चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया तो डॉ0 लोहिया ने इसे भिक्षु हत्या की संज्ञा दी तभी से भारत सरकारों का रवइया तिब्बत के प्रति अस्पष्ट और ढुलमुल रहा है। बल्कि डॉ0 लोहिया तिब्बत को सीमा संस्कृत दोनों नजरियों से महत्वपूर्ण मान कर उसकी आजादी के समर्थक थे।

विपक्ष की राजनीति करते हुए भी डॉ0 लोहिया ने विदेश नीति में सार्थक, सशक्त और स्थायी की रूपरेखा बनायी। भारत सरकार वैसी रूप रेखा बना नही पायी डॉ0 लोहिया का चिन्तन भारतीय समाज के प्रति जिस तरह से स्पष्ट और सशक्त रहा विदेशी मामलों में भी बेबाक और सजक था । डॉ0 लोहिया अपने दौर के भी बाद के भी सभी नेताओं से ज्यादा समझाते थे, कि वैश्विक मंच पर भारत की प्रभावशाली भूमिका एक स्पष्ट और मजबूत विदेश नीति की जरूरत है वे सदैव नेहरू की सरकार को चेताया करते थे । वह चाहे गुट निरपेक्ष आंदोलन की बात रही हो या राष्ट्रमंण्डल की सदस्यता की।

डॉ0 लोहिया की उपस्थिति में सन् 1952 ई0 एशियाई देशों के समाजवादियों का पहला सम्मेलन आयोजित किया , वैसी पहल फिर आगे कहीं न की जा सकी। आज जब सियासी दलों के शीर्ष पदों पर नेताओं के बेटे और धनबली बैठते जा रहे हैं । एक बड़े उपेक्षित तबके को डॉ0 लोहिया जी के वैकल्पिक रास्ते की तलाश है ताकि अधिकारों को हासिल किया जा सकेगा। अगर भारतीय राजनीति में डॉ0 लोहिया नहीं होते तो हमारी राजनीति शुद्ध रूप से परिवारतंत्र में बदल जाती। जहाँ न तो कोई भ्रष्टाचार पर बोलने वाला होता और न ही जनता के विकास की चिन्ता करने वाला। पंडित नेहरू की सरकार को राष्ट्रीय शर्म की सरकार बताने वाले लोहिया जी आज की सरकारों की उपमा के लिए शायद ही कोई शब्द ढूंढ पाते ।

सदी की सर्वोत्कृष्ठ शासन व्यवस्था के रूप में मान्य लोकतन्त्र केवल एक पद्धति न होकर शासन और जीवन की एक नैतिक धारणा भी है। जो विकास का दर्शन है जिसके द्वारा समानता पर आधारित मर्यादित अनुशासित शासन की स्थापना होती है। लोकतन्त्र का अर्थ है "शासन तन्त्र में जनता की भागीदारी" अर्थात् जनता और सरकार दोनों की ही इसमें अहम् और अनिवार्य भूमिकायें हैं।

वर्तमान भारत में लोकतन्त्र को अपनाया गया है। जिसमें सरकार जनता के कल्याण और नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिये कार्यरत् होती है। यह प्रजातन्त्र का सैद्धान्तिक पक्ष है परन्तु समाज के विकास के लिये किसी भी शासन पद्धति का केवल सैद्धान्तिक पक्ष ही नही वरन् व्यवहारिक पक्ष भी विशेष महत्व रखता है। यदि सिद्धान्त व्यवहार की कसौटी पर खरा न उतरे तो या तो सिद्धान्त गलत है या व्यवहार। तब इन दोनों के दोषों का विश्लेषण आवश्यक हो जाता है। सिद्धान्त और व्यवहार एक सिक्के के दो पहलू हैं फलस्वरूप हर सिद्धान्त व्यवहार के आधार पर निर्मित और स्थापित होता है और व्यवहार सिद्धान्तों से

नियन्त्रित और प्रभावित होता है। इस प्रकार सिद्धान्तों और व्यवहारों में द्वंद्वात्मक संबंध होते हैं। यहां सिद्धान्त का महत्व अधिक है क्योंकि सिद्धान्त व्यवहार को नियन्त्रित करता है। यही कारण है कि कोई भी सिद्धान्त उसके व्यवहारिक पक्ष से उभरता है और अपनी उपयोगिता सिद्ध करता है।

डॉ0 लोहिया ही थे जो राजनीति की गन्दी गली में शुद्ध आचरण की बात करते थे। वे एक मात्र ऐसे राजनेता थे जिन्होने अपनी पार्टी की सरकार से खुलेआम त्यागपत्र की मांग की , क्योंकि उस सरकार के शासन में आन्दोलनकारियों पर गोलियां चलाई गयीं थीं। स्वाधीन भारत में किसी भी राज्य में यह पहली गैर कांग्रेसी सरकार थी। '' हिन्दुस्तान की राजनीति में तब सफाई और भलाई आयेगी जब किसी पार्टी में खराब काम की निन्दा उसी पार्टी के लोग करें। '' और मैं यह याद दिला दूं कि मुझे यह कहने का हक है कि हम ही हिन्दुस्तान में एक राजनीतिक पार्टी हैं जिन्होंने अपनी सरकार की भी निन्दा की थी और निन्दा ही नही बल्कि एक मायने में उसको इतना तंग किया कि उसे हट जाना पड़ा। देश के महान नेता डॉ0 राममनोहर लोहिया के बहुरंगी जीवन यात्रा में ऐसे कई क्रान्तिक या अप्रत्याशित मोड़ आये जिनसे भारतीय राजनीति की मुख्यधारा बदलते बदलते रह गयी।

डा0 लोहिया ने विरोधी दलों की आन्तरिक संरचना पर प्रकाश डालते हुए कहा–प्रायः सभी दल कम–ज्यादा ऐसे सरकारी दल से जिनके पास आतंक और प्रलोभन का बाहुल्य है प्रभावित होते हैं उसकी जाने अनजाने सभी नकल करते हैं इसलिए हर विरोधी दल भी कम ज्यादा पंचमेल विचारों का अखाड़ा बन जाता है अगर उसने ऐसा नही किया तो टूट का डर रहता है । किस हद तक विचारों की और किस हद तक हितों की लड़ाई है, यह फर्क सदस्य समझ नही पाते। फिर भारतीय फटी खोपड़ी और सरकारी दल, जितनी ताकत व्यक्ति,कांग्रेस दल से लड़ने में खर्च करते हैं कम से कम उतनी ही आपसी लडाई में।

डॉ0 लोहिया ने धर्म और राजनीति का सम्बंध स्पष्ट करते हुए कहा कि 'धर्म का कार्य अच्छाई करना है और राजनीति का कार्य बुराईयों से लड़ना है। धर्म और राजनीति एक–दूसरे को पूर्ण बनाते हैं। वे एक ही वस्तु के दो रूप हैं, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, इसलिए उन्होंने धर्म को दीर्घकालीन राजनीति और राजनीति को अल्पकालीन धर्म कहा है।' अर्थात् राजनीति बुराई को समाप्त कर अच्छाई का मार्ग सुगम करती है और धर्म निरंतर अच्छाई कर बुराईयों में कमी का मार्ग सुगम करता है। डॉ0 लोहिया केवल मानव धर्मानुयायी थे। उनके मन में धर्म नैतिक गुणों का पर्याय था, इससे अधिक कुछ नहीं। डॉ0 लोहिया का धर्म के सम्बंध में कहना है कि ''मुझे लगता है कि धर्म सम्प्रदाय के अर्थ में – हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म और फिर हिन्दू धर्म के अंदर भी वैष्णव धर्म, शैव धर्म वगैरह जो कुछ भी हो सकता है उसका अर्थ सबके लिए व्यापक होना चाहिए, और वह है ,दरिद्रनारायण वाला कि सबका हित का हो।'' परंतु ऐसा नहीं हो पाया। धर्म के बाह्य पहलू–रीति–रिवाज, आचार–विचार, पूजा के ढंग तथा उसके बाह्य आचरण के अन्य तथ्यों ने साम्प्रदायिकता को जन्म दिया, जो समाज में विघटन, ईर्ष्या, घृणा तथा पतन का कारण बनीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमार आनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम

मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013

- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास – चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :1992
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009

Copyright © 2015, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.